①

पाठ्य - सामग्री
हिन्दी व्याकरण, वर्ग - XII
समास सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

— चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अल-हफ़ीज़ कॉलेज,
आरा

प्रश्न — 1. समास से आप क्या समझते हैं? सोदाहरण परिभाषित कीजिए।

उत्तर — समास का अर्थ है, संक्षेप। संक्षिप्तता से भाषा चुस्त होती है। अतः कम शब्दों में अधिक अर्थ प्रकट करना समास का मुख्य प्रयोजन है।

परिभाषा — समास उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें दो शब्दों की विभक्तियों अथवा सम्बन्धसूचक शब्दों को हटाकर एक नया शब्द बनाया जाता है।

जैसे — देश के लिए भक्ति — देशभक्ति
स्नेह में मगन — स्नेहमगन
दही में डूबा हुआ बड़ा — दहीबड़ा
देश से निकाला — देशनिकाला

प्रश्न — 2. समास से जुड़े हुए निम्नलिखित शब्दों का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।
(क) पूर्व पद (ख) उत्तर पद (ग) समस्त पद (घ) विग्रह

उत्तर — (क) सामासिक पद का पहला पद (भाग) पूर्वपद कहलाता है।
(ख) सामासिक पद का दूसरा पद (भाग) उत्तर पद कहलाता है।
(ग) पूर्व और उत्तर पद को मिलाकर बनाया हुआ पद समस्त पद कहलाता है।
(घ) समस्त पद के खंड करके उन्हें अलग-अलग दिखाने की रीति विग्रह कहलाती है।

प्रश्न — 3. संधि और समास में क्या अंतर है? स्पष्ट करें।

उत्तर — (क) संधि दो वर्णों के मेल से बनती है जबकि समास में दो या दो से अधिक पदों का मेल होता है।
(ख) संधि में अलग-अलग करने की विधि विच्छेद कहलाती है जबकि समास में यह विधि विग्रह कहलाती है।
(ग) जहाँ संधि होती है, वहाँ समास का होना आवश्यक नहीं है, लेकिन अधिकांश सामासिक पदों में भी संधि होती है।

प्रश्न — 4. समास के मुख्य भेदों का संक्षिप्त परिचय दें।

उत्तर — समास के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं —
अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व और बहुव्रीहि

(क) अव्ययीभाव — अव्ययीभाव समास में पूर्वपद की प्रधानता होती है। इसमें पूर्वपद प्राय: अव्यय होता है। इस समास में दो शब्दों को

→

मिलाकर जो नया शब्द बनता है, वह अव्यय का काम करता है।
जैसे — यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार। प्रतिदिन = दिन दिन, आदि।

(ख) तत्पुरुष — तत्पुरुष में उत्तर पद की प्रधानता होती है। इस समास में पहला पद प्रायः संज्ञा या विशेषण और दूसरा शब्द संज्ञा होता है।
जैसे — रसोईघर = रसोई के लिए घर। आकाशपीड़ित = आकाश से पीड़ित

(ग) कर्मधारय — कर्मधारय समास में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान सम्बन्ध होता है। जैसे —
विशेषण-विशेष्य — नीलकमल = नीला कमल, पीताम्बर = पीत अम्बर
उपमेय-उपमान — चरण-कमल = कमल रूपी चरण, मृगनयन = मृग के समान नयन

(घ) द्विगु — द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है। यही पद समस्त पद-समूह का बोध कराता है। जैसे —
चौराहा — चार राहों का समाहार
नवरत्न — नौ रत्नों का समाहार

(ङ) द्वन्द्व — द्वन्द्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें दो संज्ञाओं के बीच से 'और' अथवा 'तथा' इत्यादि शब्दों को हटाकर (दोनों को) जोड़ दिया जाता है।
जैसे — ऋषि और मुनि = ऋषि-मुनि।
भाई और बहन = भाई-बहन।

(च) बहुव्रीहि — बहुव्रीहि समास में कोई पद प्रधान नहीं होता। इसमें प्रयुक्त दोनों शब्द मिलकर किसी एक संज्ञा के विशेषण बन जाते हैं और उसी को व्यक्त करते हैं।
जैसे — नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका, अर्थात् शिव।
दशानन = दस हैं आनन जिसके, अर्थात् रावण।

प्रश्न — 5. तत्पुरुष समास के भेदों का सोदाहरण परिचय दें।

उत्तर — अवयव या बनावट की दृष्टि से समास के मुख्यतः दो भेद हैं।
(क) व्यधिकरण तत्पुरुष और (ख) समानाधिकरण तत्पुरुष

(क) व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद होते हैं। ये भेद आठ कारकों में से दो को छोड़कर शेष छह कारकीय विभक्तियों के आधार पर बने हैं। अतः इन्हें कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, सम्प्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, सम्बन्ध तत्पुरुष और अधिकरण तत्पुरुष कहा जाता है। इन्हें द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी तत्पुरुष के नाम से भी पुकारा जाता है।

उदाहरण — कर्म (द्वितीया) तत्पुरुष — चिड़ीमार = चिड़ियों को मारनेवाला,
गृहागत = गृह को आगत — 'को' विभक्ति का लोप।

(ख) समानाधिकरण तत्पुरुष — समानाधिकरण तत्पुरुष को सामान्यतः कर्मधारय कहा जाता है, क्योंकि इसमें विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का मेल होता है। इसका विग्रह करने पर दोनों खंडों में एक समान कर्ता-कारक की प्रथमा विभक्ति रहती है। इसलिए इसे समानाधिकरण या कर्मधारय कहा जाता है।

उदाहरण — रक्तकमल = रक्त - विशेषण, कमल - विशेष्य (संज्ञा)
महाराजा = महान् - विशेषण, राजा - विशेष्य (संज्ञा)

प्रश्न - 6. बहुव्रीहि और कर्मधारय में अंतर स्पष्ट करें।

बहुव्रीहि और कर्मधारय में अंतर का आधार विग्रह होता है। ऐसे बहुत-से शब्द हैं जिनका विग्रह अलग-अलग ढंग से करने पर एक बहुव्रीहि का उदाहरण बन जाता है और दूसरा विग्रह कर्मधारय का हो जाता है। जैसे—'पीताम्बर' शब्द में बहुव्रीहि समास भी हो सकता है और कर्मधारय भी।

जैसे— पीत है जो अम्बर = कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य)
पीत है अम्बर जिसका वह (कृष्ण) बहुव्रीहि

कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो सिर्फ कर्मधारय अथवा सिर्फ बहुव्रीहि होते हैं।

जैसे — विद्या रूपी धन = विद्याधन (कर्मधारय)
चन्द्रमा के समान मुख = चन्द्रमुख (कर्मधारय)
नीला है कंठ जिसका वह = नीलकंठ (शिव) (बहुव्रीहि)
चक्र है हाथ में जिसके वह = चक्रपाणि (विष्णु) (बहुव्रीहि)

प्रश्न - 7. समास के महत्वपूर्ण उपभेदों का उदाहरण परिचय दें।

समास के तीन महत्वपूर्ण उपभेद हैं — मध्यमपदलोपी समास, नञ् तत्पुरुष और अलुक् तत्पुरुष। इनमें प्रथम कर्मधारय और शेष दो तत्पुरुष के उपभेद हैं।

(क) मध्यमपदलोपी — इसमें मध्य का पद लुप्त हो जाता है।

जैसे — वनमानुष — वन में रहने वाला मनुष्य
बैलगाड़ी — बैलों से खींची जाने वाली गाड़ी

(ख) नञ् तत्पुरुष — जिसमें अभाव या निषेध सूचित करने वाला 'अ' या अन् हो।

जैसे — अलौकिक, अन्याय, असम्भव, अनाथ आदि।

(ग) अलुक् तत्पुरुष — जिस समस्तपद में पूर्व पद में विभक्ति चिह्न नहीं होता। ऐसे पद प्रायः संस्कृत में ही मिलते हैं और हिन्दी में तत्सम शब्द कहलाते हैं।

जैसे — विश्वंभर (विश्व को भरने वाला)
वाचस्पति (वाणी का पति)
मनसिज (मन में उत्पन्न)
खेचर (आकाश में घूमने वाला)

8. समास सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

समस्त पद	विग्रह	समास-भेद
आमरण	मरण तक	अव्ययीभाव
आजन्म	जन्म भर	"
आजीवन	जीवन भर	"
यथा समय	समय के अनुसार	"
आपाद मस्तक	पैर से मस्तक तक	"
युधिष्ठिर	युद्ध में स्थिर	तत्पुरुष
स्वर्गप्राप्त	स्वर्ग को प्राप्त	"
रोगपीड़ित	रोग से पीड़ित	"
श्रमजीवी	श्रम से जीविका	"
राहखर्च	राह के लिए खर्च	"
सन्मार्ग	सत् मार्ग	कर्मधारय
श्यामसुन्दर	श्याम है जो सुन्दर	"
घनश्याम	घन जैसा श्याम	"
परमानन्द	परम आनन्द	"
नीलोत्पल	नील उत्पल (कमल)	"
पंचवटी	पाँच वटों का समाहार	द्विगु
सतसई	सात सौ का समाहार	"
चतुर्वेद	चार वेदों का समाहार	"
अष्टाध्यायी	आठ अध्यायों का समाहार	"
चतुरानन	चार हैं आनन जिसके	बहुव्रीहि
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी	"
सावधान	अवधान के साथ है जो	"
सपरिवार	परिवार के साथ है जो	"
दिगम्बर	दिक् है अम्बर जिसका	"
पाप-पुण्य	पाप या पुण्य	द्वन्द्व
घर-आँगन	घर आँगन वगैरह	"
थोड़ा-बहुत	थोड़ा या बहुत	"
लाभालाभ	लाभ या अलाभ	"
देवासुर	देव और असुर	"
पर्णशाला	पर्ण से बनी हुई शाला	मध्यमपद लोपी
घृतान्न	घी मिश्रित अन्न	"